आपातकाल में सृजन फुलवारी

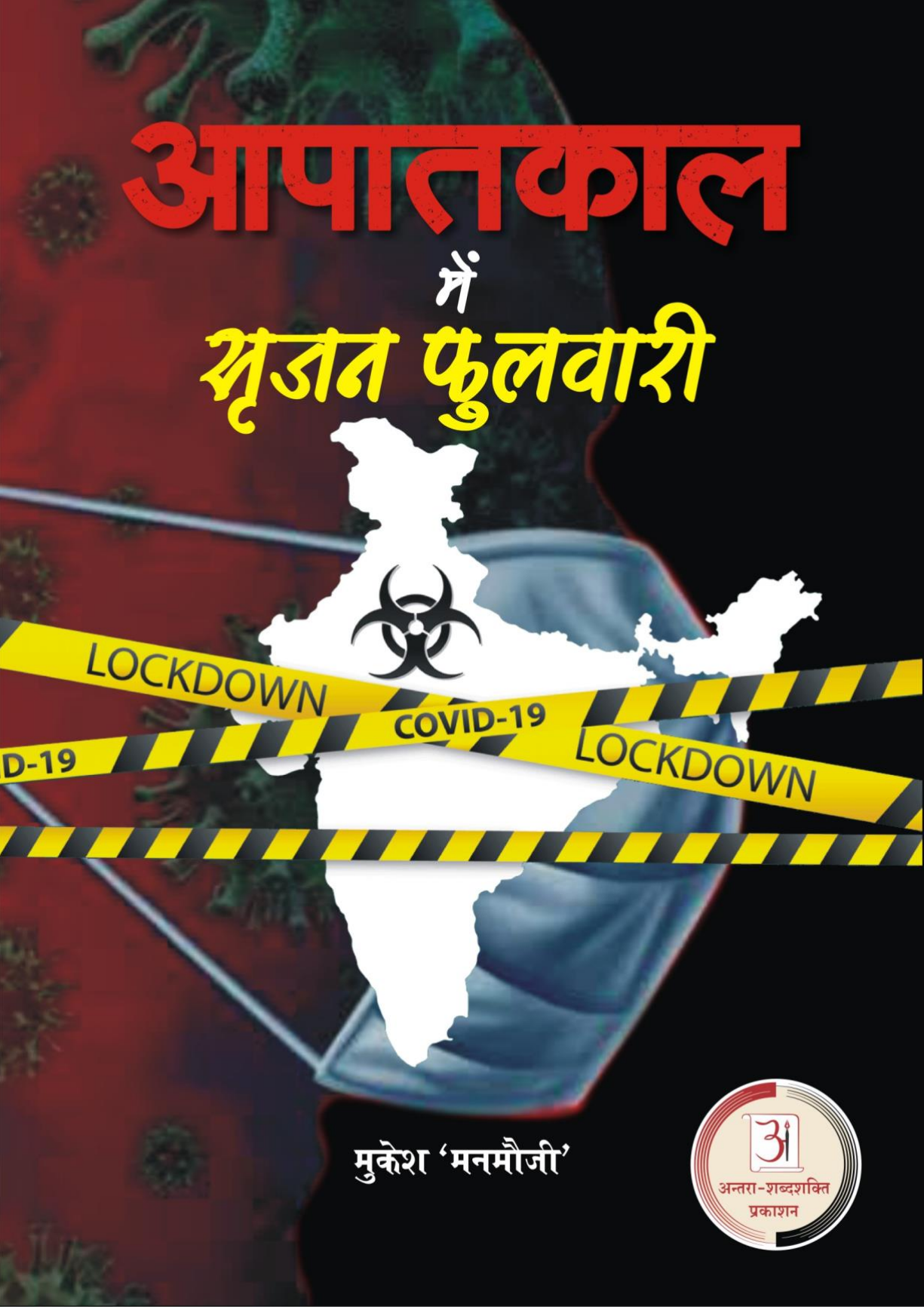

मुकेश 'मनमौजी'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मुकेश मनमौजी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-183-1

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, मुकेश मनमौजी
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MUKESH MANMAUJI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मोक्ष धाम	6
2.	ग़ज़ल	7
3.	शब्द	8
4.	थपकियाँ	9
5.	श्रम के हवाले	10
6.	चेहरे पर चेहरा	11
7.	दीप	12
8.	ऑंसू	13
9.	काला बाजारी	14
10.	मीठी नींद	15
11.	आधी रात के बाद	16
12.	कदम रुके हुए	17
13.	लाक डाउन	18
14.	जलवा	19
15.	मेरी ग़ज़ल	20
16.	तेरा नाम	21

मोक्ष धाम

मोदी जी कह रहे
घर में रहो
पुलिस कह रही
घर में रहो
लेकिन हम कहाँ
किसी की मान रहे
जानलेवा है कोरोना
ये भी नही जान रहे
बार बार घर से निकल
सड़क पर आते
कदम घरों पर न ठहर पाते
न दूरी बना रहें
न मास्क लगा रहें
न ही बार बार धो रहे हाथ
मतलब यहीं की
धोखा कर रहे हम जानबूझकर
खुद के साथ
मत मानो, बिलकुल मत मानो
करो अपनी मनमर्जी से
सारे काम
पर इतना रखना याद तुम
साथ तुम्हारे कोई जायेगा नहीं
एंबुलेंस ही ले जायेगी सीधे
अस्पताल से मोक्ष धाम।

ग़ज़ल

दामन आँसू से भिगोने लगी गजल
दर्द देखा मेरा तो रोने लगी गजल

जाने कैसा इल्जाम हम पर आया
बोझ बेवफाई का ढोने लगी गजल

लफ्ज ही नदारद हुए जब जुबां से
मायने अपने भी खोने लगी गजल

अपने ही रूठे किस कदर देखकर
खुद ही पागल सी होने लगी गजल

रात बीती कलम ही चलती रही
थककर अब तो सोने लगी गजल

शब्द

हाँ आज बैठा हूँ
फुर्सत से मैं
आधी रात को
हिसाब लगाने
जिंदगी का
क्या पाया क्या मिला
क्या हैसियत मेरी
पुराने कनस्तर
सब खाली पड़े
काठ की आलमारी
में भी कुछ नही
टेबिल के दराज में
कुछ कलम कुछ कागज
कुछ कविताएँ
क्या ये है पूँजी मेरी
मन ने मुझसे किया
प्रश्न जब ऐसा
तो उत्तर मेरा यहीं
हाँ यहीं है संचय मेरा, मेरा सब कुछ यहीं
पास मेरे कागजों पर लिखे जो शब्द है
ये ही मेरी जीविका के साधन है
बहुत कुछ दिया है, इन शब्दों ने मुझे।

थपकियाँ

थपकियां देकर खुद को सुलाते रहे
रात सारी हम तो लोरीयां गाते रहे

नींद का दूर तक मानोनिशान न था
भूले बिसरे पल हमें याद आते रहे

वो एक जमाना था जो गुजर गया
ख्याल आसपास उसके मंडराते रहे

नींद आती न सपना आता अब कोई
बार बार बत्ती ही बुझाते जलाते रहें

याद जब सताने लगी देर रात तेरी
उठ बैठे हम कलम ही चलाते रहें

आँसू जबआने लगे आँखों में मेरी
गीत दर्द से भरा फिर गुनगुनाते रहे

जो तकदीर में नहीं वो मिलता कैसे
बात यही खुद को खुद समझाते रहे।

श्रम के हवाले

तपती दोपहरी है तन श्रम के हवाले
तुमने देखे नही उसके पाँव के छाले

जिम्मेदारियाँ कांधे का है बोझ बनी
भूखा पेट माँगता बस दो ही निवाले

तकदीर भीअजब जब खेल दिखाती
रात ही नही लगते उसे दिन भी काले

झोपड़ी है गरीब की जीने का सहारा
इज्जत ढाँक रहा अपनी पर्दा डाले

रात भर टिमटिमाता दिया माटी का
कहाँ से लाये बेचारा वो रंगीन उजाले

अभावों से जूझता कुछ नही सूझता
जिंदगी दीवार एक अलमारी न आले।

चेहरे पर चेहरा

चेहरे पर चेहरा लगाया तुमने
ये चेहरा असली छुपाया तुमने

चले थे धोखा देने दूसरों को तुम
धोखा खुद से खुद खाया तुमने

सोच थी जग ये सारा लूट ही लोगे
सच बताना क्या कुछ पाया तुमने

एक तुम ही नही फरेबी और भी है
आवाज देकर किसे बुलाया तुमने

आँसू बिकते रहें दर्द के बाजार में
रोटी खिलाकर किसे सुलाया तुमने

सच्चाई थी वो मरी जो चौराहे पर
आँसू कभी आँख से बहाया तुमने

स्वार्थी हो तुम भी सब में जानता हूँ
मानवता को अपनी लजाया तुमने।

दीप

रात काली अमावस्या की
देखो सुना लगे आकाश
चाँदनी धरा पर उतरी
दीपों में भर दिया प्रकाश

अयोध्या नगरी खुशी छायी
राम लौट है वापस आये
जनता सगरी उत्सव मनाती
दीप खुशी के है जलाये

परंपरा हजारों साल पुरानी
बन गई त्यौहार दीवाली
लक्ष्मी पूजन घर घर होती
हर आँगन में खुशहाली

सुख समृद्धि की कामना
एक दूजे के लिए करते
स्नेह लुटाते आदर जताते
दहलीज दीप हम धरते

कामना यहीं मेरी भी
दीवाली पर आप
सुख समृद्धि खूब पाएँ
शांति सदभाव के दीप जलाएँ।

आँसू

आँसू बिकते नही देखा बाजार में
मोती सी चमक देखी आँसू धार में

सहज ही निकल पड़ते है आँखों से
कभी बिछोह में तो कभी इंतज़ार में

दर्द की निशानी है ऐसा कहते सभी
छलक पड़ते कभी खुशी बेशुमार में

माँ की आँखों ममता का नाम पाया
बेटी रोती जब कोई दुल्हन श्रंगार में

बूढ़ा बाप भी लिपट बेटे से रो दिया
वृद्धाश्रम मिला जब उसे उपहार में

रिश्ते नाते सब है स्वार्थ के खातिर
कोई किसी का नही इस संसार में।

काला बाजारी

जाने क्यों
पीड़ा ग्रस्त मन मेरा
मुझसे कहता
क्या पाया जीवन में आज तक मैंने
कुछ भी नहीं,..
तंगहाली मेहमान
बन बैठी घर में
दूर तक भागना
रात भर जागना
ठहाकों का व्यापार
हासिल कुछ नहीं
जरूरतें पैसा मांगती
दो रोटी बस भूख ही तो मिटाती है
भौतिक साधन,
व्यवस्थाएँ मंहगी बहुत
कागज पर लिखे शब्द, शब्द ही हैं
पैसा चलता है बाजार में
अब शब्द पैसा
जुटाने का सामर्थ खो रहे है
प्रतिस्पर्धा जारी
हुनर का मोल होता नही अब यहाँ
हर तरफ बस काला बाजारी है।

मीठी नींद

दिनभर चला सूरज
पूर्व से पश्चिम तक आया
ठहर गया
संध्या सिंदूरी तिलक लगा
माथे पर उसके
विश्राम कक्ष की ओर ले गई उसे
ओट में छिपा चाँद
चाँदनी को आमंत्रित कर रहा
संध्या ने आगवानी की उसकी
रजनी को सितारों की ओढ़ा
झिलमिल चादर
किया प्रस्थान संध्या ने
आसमान पर चाँद रह गया अकेला
रजनी ने बढ़ाए कदम
पकड़ लिया दामन चाँद का
चार पहर का ही सफर था
दोनों अठखेलियाँ सह
कर रहे आसमान परय
प्रेम रस भरी चमक चाँदनी
उतरी धरा के आँगन में
मीठी नींद सबको सुलाने।

आधी रात के बाद

रात का सन्नाटा
दूर तक कोई
आवाज नहीं
दिल के दरवाजे पर
दस्तक देती यादें
उठ बैठा मन मेरा
कलम तलाशता
मध्दिम रोशनी में
फिर वही
रोज की तरह
भींगे भींगे शब्दों का
कागज पर सरकना
नींद का आँखों से
ओझल हो जाना
खोया मन
अतीत के पन्ने
पलटता बार बार
अंतसः से निकल
दर्द बाहर आया
आँखों में आँसू लेकर
मन को समझना
मेरे बस की बात नहीं
मन मेरा बस में मेरे
होता नहीं
आधी रात के बाद।

कदम रुके हुए

कदम रुके हुए
मन भटक रहा
भयभीत सब
जाने क्या है होने वाला
खबरें सुन डरता आदमी
सुनसान रास्ते
आवाजाही इक्का-दुक्का
शोर लुप्त हुआ आखिर क्यों
पक्षियों का कलरब
सुबह शाम आकाश की
विशुद्ध लालिमा
नदियों का जल चमक लिए
धुआँ धूल सब लापता
मानव ने किया खिलवाड़
जैविक हथियार की सोच प्रदूषित मानसिकता
दुष्परिणाम अर्थ व्यर्थ, सब अर्नथ,
पिंजरे में कैद, फड़फड़ाना है मजबूरी
कपाट बंद मंदिरों के, बंद तमाम प्रार्थना घर
करतूतों से आज अपनी, लग रहा मानव को डर
शक्तिशाली बनने की होड़
मानवीयता से लिया मुँह मोड़
सारा विश्व को संकट में , जाने कैसी ये लाचारी
जीवन का है मूल्य क्या,समझा रही ये महामारी।

लाक डाउन

घर में कैद
खत्म सारा बाहर का मजा
खाना बनाना
पापड़ बेलना
न जाने कैसी मिली ये सजा
सुबह उठते ही
पत्नी पहले झाड़ू हाथ थमाती
पूरा घर साफ करो
फिर चाय पिलाती
दिनभर काम करो हुई
कोई कमी जरा सी
देती धमकी मुझे
पुलिस बुला कहूंगी
कि आ रही तुम्हें
दो दिन से छींक और खांसी
लाक डाउन से
चलते जाने क्या क्या
रहे शेष होना
रावण को तो मार गिराया
भगवान अभी आप ने
अब जल्द मार भगाइये भयावह कोरोना।

जलवा

जलवा ऐसा नही कोई उधर देखा
थम कर देर बड़ी भर नजर देखा

हमें मालूम न था होता यहाँ ऐसा भी
सड़कों पर नशे में झूमता शहर देखा

दूध बेचता रहा दिन भर वो धूप में
सरकारी ठेके पर बिकता जहर देखा

बदलना था सब बदल ही गया देखो
इस चुनाव परिवर्तन की लहर देखा।

अब नहीं कटेगें मूक जानवर यहाँ
बूचडखानो पर टूटता कहर देखा

आस्था हमारी होगी सम्मानित अब
केशरिया सुबह भगवा दोपहर देखा

मेरी ग़ज़ल

किसने चुपके से गुनगुनायी मेरी गजल
दर्द अपना हुई प्रीत परायी मेरी गजल

हम जाग रहें ख्यालों में उसके खोये है
याद बनकर फिर आयी मेरी गजल

अतीत मेरा मुझसे भूलाया नहीं जाता
चोट किस कदर है खायी मेरी गजल

आँखों की नमी अब यहीं कहती यहाँ
जमाने में कितनी सतायी मेरी गजल

दूसरों को ही खुशियाँ लूटाती रही सदा
खुद के लिए ही दुखदायी मेरी गजल

मंजिल पर पहुँचे जो पता मुझसे पूछा
मेरे ही काम कभी न आयी मेरी ग़ज़ल

तेरा नाम

सुबह हो या शाम. अधरों पर तेरा नाम!

तेरे लिए लिखे गीत
तुम ही मेरे मनमीत
देखा मैंने जब तुम्हें
जागी मन मेरे प्रीत
खत में नया पैगाम
सुबह हो या शाम. अधरों पर तेरा नाम!

अधरों पर तेरा नाम
तुम सावन सी प्यारी
केशर चंदन की क्यारी
महक रही खुशबू से
देखो बगीया ये सारी
चाहत बनी पावन धाम
सुबह हो या शाम. अधरों पर तेरा नाम!

होवें प्रणय अनुबंध
मन से मन के संबंध
हर्षित हर पल हमारा
अलंकृत जीवन छंद
प्रेम प्रसंग पूर्ण विराम
सुबह हो या शाम. अधरों पर तेरा नाम!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

मुकेश 'मनमौजी'

हास्य-व्यंग्य कवि
शीशघर वार्ड, छपारा
जिला- सिवनी (म.प्र.)
Mobile - 8871813171

आपातकाल एक चुनौती बनकर खड़ा होता है क्या करें क्या न करें ये सोचकर हम किसी निर्णय पर न पहुँच कर निराशाता की ओर अग्रसर होते है ऐसी विषम परिस्थितियों में हमारा हुनर हमारी उपलब्धि ही हमें कुछ करने की प्रेरणा देती है।

हमारी प्रतिभा झटपटाहट महसूस करती चिंतन में उलझा मन हाथ में कलम आते ही कल्पना के आकाश की सैर करने निकल पड़ता और हमारी सृजन यात्रा कविता के मुकाम तक पहुँच कर विराम लेती।

आपातकाल में अन्तराशब्दशक्ति ने हमें अपने सृजन के लिए प्रेरित कर निराशा से उबारने का सफल और सराहनीय प्रयास किया है। इसके लिए अंतरा शब्दशक्ति का हृदय से आभारी हूँ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-198-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/